



सूफी संत: निज़ामुद्दीन और अमीर खुसरो

भारत में सामाजिक समरसता और मेल-जोल स्थापित करने में सूफी संत शेख निज़ामुद्दीन औलिया और उनके शिष्य अमीर खुसरो का विशेष योगदान रहा है। शेख निज़ामुद्दीन ने मानव-प्रेम तथा सद्भावना का संदेश देकर भारतीय जीवन दर्शन को प्रभावित किया। अमीर खुसरो हिन्दू-मुस्लिम समाज और संस्कृति के वाहक बने और उन्होंने सांस्कृतिक समन्वय का मार्ग प्रशस्त किया।

शेख निज़ामुद्दीन औलिया

शेख निज़ामुद्दीन औलिया का जन्म 1236 ई0 में बदायूँ में हुआ था। केवल पाँच वर्ष की उम्र में ही उनके पिता का देहान्त हो गया। पिता की मृत्यु के उपरान्त उनके पालन-पोषण और शिक्षा का भार माता जुलैखा के कंधों पर आ गया। माता के प्रभाव से बालक निज़ामुद्दीन में आध्यात्मिक विचारों का उदय हुआ। बदायूँ में आरम्भिक शिक्षा पाने के बाद वे अपनी माँ के साथ दिल्ली चले गए। वहाँ रहकर निज़ामुद्दीन ने आगे की शिक्षा ग्रहण की और शीघ्र ही प्रसिद्ध विद्वान बन गए।

उन दिनों सूफी संत हजरत ख्वाजा फरीदुद्दीन की बड़ी ख्याति थी। वे अजोधन (अब पाकिस्तान) में रहते थे। उनकी प्रसिद्धि सुनकर निज़ामुद्दीन भी उनके दर्शन के लिए अजोधन गए। बाबा फरीद ने अति प्रसन्नता एवं प्रेम से शेख निज़ामुद्दीन को अपना शिष्य बना लिया। बाबा फरीद के सानिध्य में रहकर शेख निज़ामुद्दीन ने उनसे आध्यात्मिक चिंतन एवं सादना के रहस्यों की जानकारी प्राप्त की। कुछ समय बाद वे पुनः दिल्ली लौट आए।



निज़ामुद्दीन औलिया की

दिल्ली स्थित दरगाह

दिल्ली लौटने पर शेख निज़ामुद्दीन ने गयासपुर नामक स्थान पर एक मठ की स्थापना की। यह स्थान नई दिल्ली में है, जो आज हजरत निज़ामुद्दीन के नाम से जाना जाता है। गयासपुर का मठ शेख साहब के जीवन काल में ही दिल्ली के लोगों के लिए सबसे बड़ा धार्मिक श्रद्धा का तीर्थस्थल बन गया था।

1265 में बाबा फरीद के निधन के पश्चात् शेख निज़ामुद्दीन औलिया उनके उत्तराधिकारी घोषित कर दिए गए। अब शेख का नाम दिल्ली एवं आस-पास के क्षेत्रों में भी प्रसिद्ध हो गया। लोग दूर-दराज से उनके दर्शन के लिए आने लगे। शेख को स्वयं कविता में बड़ी रुचि थी। उनकी खानकाह (मठ) में अच्छे कच्चा आते रहते थे। उनके कच्वाली समारोहों में भी बड़ी संख्या में भीड़ जुटती थी।

शेख निज़ामुद्दीन के हृदय में गरीबों के प्रति अत्यधिक करुणा थी। उनको उपहार और भेंट में जो कुछ चीजें मिलती थीं, उसे वे खानकाह में अपने श्रद्धालुओं में बाँट दिया करते थे। उनका लंगर (भंडारा) सभी के लिए खुला रहता था।

शेख साहब ने जीवन भर मानव-प्रेम का प्रचार किया। उन्होंने लोगों को सांसारिक बन्धनों से मुक्त होने की शिक्षा दी। उनकी शिष्य मंडली में सभी वर्गों एवं क्षेत्रों के लोग शामिल थे। वे अपने शिष्यों का ध्यान सदैव सामाजिक उत्तरदायित्व की ओर आकृष्ट कराते रहे। 1325 ई0 में शेख निज़ामुद्दीन औलिया के निधन से पूरा जनमानस शोक संतप्त हो गया। अमीर खुसरो के शब्दों में-

गोरी सोवै सेज पर, मुख पर डारे केस।

चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देस।।

भले ही वे आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन मानवता के प्रति प्रेम और सेवा भावना जैसे गुणों के कारण शेख निज़ामुद्दीन औलिया को महबूब-ए-इलाही (प्रभु के प्रिय) का दर्जा मिला। आज भी वे लोगों में सुल्तान-उल-औलिया (संत सम्राट) के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनकी पवित्र मजार पर प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में लोग आते हैं और मन्नत माँगते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

अमीर खुसरो:

“वह आये तो शादी होय, उस बिन दूजा और न कोय।

क्यों सखि साजन ?

नहिं सखि, ‘ढोल’ !”

अमीर खुसरो की मुकरियाँ और पहेलियाँ भारतीय जनमानस में रची-बसी हैं। हिन्दी कृतियों के कारण ही उनको जनसाधारण में विशेष लोकप्रियता प्राप्त है। खुसरो की

हिन्दी रचनाओं में गीत, दोहे, पहेलियाँ और मुकरियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं।



शेख निज़ामुद्दीन औलिया के अनन्य भक्त एवं शिष्य अमीर खुसरो का जन्म 1253 ई0 में एटा जिले के पटियाली कस्बे में हुआ। इनके पिता का नाम अमीर सैफुद्दीन महमूद था। पिता प्रकृति, कला और काव्य के प्रेमी थे, जिसका असर अमीर खुसरो पर बचपन से ही पड़ा। युवा होने पर खुसरो ने एक दरबारी का जीवन चुना। सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी और सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने खुसरो को अपने दरबार में कवि, साहित्यकार और संगीतज्ञ के रूप में सम्मान दिया। राज-दरबार एवं अन्य कलाकारों के सानिध्य में खुसरो की प्रतिभा दिन-ब-दिन निखरती गई। अमीर खुसरो फारसी और हिन्दी दोनों भाषाओं के विद्वान थे, अरबी और संस्कृत का भी उन्हें अच्छा खासा ज्ञान था। उन्होंने अपनी रचनाओं में भारत की जलवायु, फल-फूल और पशु-पक्षियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। खुसरो ने दिल्ली को बगदाद से भी बढ़कर माना है। भारतीय दर्शन को उन्होंने यूनान और रोम से श्रेष्ठ बताया है। उनके अनुसार-“इस देश के कोने-कोने में शिक्षा और ज्ञान बिखरे पड़े हैं।” उन्होंने अपनी रचनाओं में भारत की सराहना भी की है। उन्हें भारतीय होने का बहुत गर्व था। अमीर खुसरो ने अपने ग्रन्थ ‘गुर्रतुल कलाम’ में लिखा है-“मैं एक हिन्दुस्तानी तुर्क हूँ। आपके प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दे सकता हूँ.....। मैं “तूतिए-हिन्द” (हिन्दुस्तान का तोता) हूँ। आप मुझसे हिंदी में प्रश्न करें, ताकि मैं आपसे भलीभाँति बात कर सकूँ।”

अमीर खुसरो उच्चकोटि के संगीतज्ञ भी थे। वह प्रथम भारतीय थे जिन्होंने ईरानी और भारतीय रागों के सम्मिश्रण की बात सोची। उन्होंने कई रागों की रचना भी की। इन रागों ने हिन्दू-मुस्लिम दोनों संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व किया। गायन में नयी पद्धति ‘ख्याल’ अमीर खुसरो की देन है। उन्होंने भारतीय ‘वीणा’ और ईरानी ‘तम्बूरा’ के संयोग से ‘सितार’ का आविष्कार किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने ‘मृदंग’ को सुधार कर ‘तबले’ का रूप दिया। शेख निज़ामुद्दीन औलिया का शिष्य होने के कारण खुसरो पर सूफी संतों की मान्यताओं का विशेष प्रभाव था। भारत के साथ ही विदेशों के फारसी कवियों में भी उनको उपयुक्त स्थान मिला। उन्होंने ख्वाजा हजरत अमीर खुसरो के नाम से ख्याति प्राप्त की। 1325 ई0 में शेख निज़ामुद्दीन औलिया के निधन के बाद अमीर खुसरो विरक्त होकर रहने लगे और उसी वर्ष उनका भी देहावसान हो गया।

खुसरो एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता उनके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता थी। लोगों से मेल-जोल रखने के कारण वे जनसामान्य में अत्यधिक लोकप्रिय थे। समाज के प्रत्येक वर्ग के लोग उन्हें अपने बीच पाकर खुश हो उठते थे। भारतीय इतिहास में उनका व्यक्तित्व समकालीन लोगों के मध्य अतुलनीय एवं अद्वितीय था।

पारिभाषिक शब्दावली

मुकरियाँ: पहेलियों का एक प्रकार है जिसका उत्तर उसकी अखिरी पंक्ति में निहित होता है।

ख्याल: शास्त्रीय गायन का एक प्रकार है।

तम्बूरा: एक प्रकार का वाद्य यंत्र है। इसमें चार तार लगे होते हैं।

अभ्यास

1. शेख निज़ामुद्दीन औलिया अजोधन क्यों गए ?
2. बाबा फरीद के निधन के बाद शेख निज़ामुद्दीन औलिया को उनका उत्तराधिकारी क्यों घोषित किया गया ?
3. शेख निज़ामुद्दीन अपने शिष्यों का ध्यान किस ओर और क्यों आकृष्ट कराते रहे ?
4. अमीर खुसरो को किन-किन भाषाओं का ज्ञान था ?
5. अमीर खुसरो ने संगीत के क्षेत्र में क्या योगदान किया है ?
6. अमीर खुसरो जनसाधारण में क्यों प्रसिद्ध थे ?
7. सही वाक्य पर सही (✓) और गलत वाक्य पर गलत (x) का चिह्न लगाइए-
 - (क) अमीर खुसरो ने हिन्दू-मुस्लिम समाज और संस्कृति के बीच समन्वय का मार्ग प्रशस्त किया।
 - (ख) अमीर खुसरो ने गयासपुर नामक स्थान पर एक मठ की स्थापना की।
 - (ग) शेख निज़ामुद्दीन औलिया को बाबा फरीद के निधन के बाद उनका उत्तराधिकारी घोषित किया गया।
 - (घ) बदायूँ में शिक्षा प्राप्त करने के बाद अमीर खुसरो दिल्ली चले गए।
 - (ङ) शेख निज़ामुद्दीन ने अपनी कविताओं में भारत की सराहना की है।
 - (च) अमीर खुसरो ने वीणा और तम्बूरा के संयोग से सितार का आविष्कार किया।
8. भाव स्पष्ट कीजिए-

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस।

चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देस।।

9.अपने शिक्षक/शिक्षिका से पता कीजिए-

(क) हजरत निज़ामुद्दीन कहाँ है और क्यों प्रसिद्ध है ?

(ख)शेख निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह कहाँ स्थित है ?

(ग) पहेलियों और मुकरियों में क्या अंतर होता है ?

10.स्वयं कीजिए-

(क)अमीर खुसरो की पहेलियाँ आज भी जनमानस में बोली-सुनी जाती हैं। अपने दादी-नानी से चर्चा कीजिए और पहेलियों का संग्रह कीजिए।

(ख)मानचित्र में खोजिए-

बदायूँ, हजरत निज़ामुद्दीन स्टेशन, नई दिल्ली, एटा।

योग्यता विस्तार:-

पता करके लिखिए कि अमीर खुसरो हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के सबसे प्रिय शिष्य कैसे बने ?

अमीर खुसरो को अपने भारतीय होने पर क्यों गर्व था?